6

वर्ण

वर्ण ऐसी अन्य संगीत विधा है जो अभ्यास गानं और सभा गानं अर्थात मूल अभ्यास और प्रदर्शनकारी संगीत दोनों में मिलती है। वर्णं को सामान्यतया संगीत सभा के आरंभ में गाया जाता है। इसमें पद कम होते हैं और 'तानं' के अनुरूप रचित स्वर वर्ण विस्तार अधिक होता है। सभा गान के लिये रचित वर्णं को तान वर्णं कहते हैं। इसके दो भाग होते हैं। प्रथम भाग, जिसे 'पूर्वांग' कहते हैं, में पल्लवी, अनुपल्लवी और मुख्तायी स्वर होते हैं। दूसरा भाग, जिसमें चरण और चरण स्वर होते हैं, 'उत्तरांग' कहलाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात, शिद्यार्थी

- आवाज के गुण को सुधार पायेगा;
- विभिन्न स्वर प्रतिरूप बता पायेगा;
- गतियों के विभिन्न प्रतिरूप प्रस्तुत कर पायेगा;
- स्वर कल्पना का स्वरूप पहचान पायेगा।

रागः हंसध्वनि

आरोहनं- स रि$_2$ ग$_2$ प नि$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ प ग$_2$ रि$_2$ स

यह औडव- औडव राग है

वादी स्वरः ग

संवादीः नि

टिप्पणी

संचारं

ग रि ग प – ग प नि प ग रि – ग रि स निछ पछ , – पछ निछ स रि ग रि, – ग रि ग प नि, – नि प ग प नि सं, – प नि सं रिं गं रिं – गं रिं सं नि प – – ग प ग रि, – गं रिं सं,

पल्लवी

जलजक्ष निन्नेद भाषी

चल मरलु कोन्नदीर

अनुपल्लवी

चेलियनेल रवदेमीर

चेलुवुदैना श्री व्यंकटेश

चरणं

नीसति दोरनेगान

रागः हंसध्वनि **रचयिताः वीना कुप्पियर**

तालः आदि **आरोहनं- स रि ग प नि सं अवरोहनं- सं नि प ग रि स**

पल्लवी

ग , रि , स, , ,	–नि़ स रि ग रि रि़ स नि ।	–स रि स स नि़- प़ नि़ स ।	रि – प़च्छ , नि़ , स , रि ॥
ज ल ज , , ,	काक्षा , , , निन , ,	ने, , , , द, ,	, भा , , स आ ,
ग रि स–नि़ स रि–प़	नि़ स रि – ग प ग नि प	। – स नि़ स रि़, स नि़	प । प ग, रि, स, रि ॥
च, लं , , म , ,	, र , , लु , ,	को , , , , न्न, ,	, दी , , , र , ,

अनुपल्लवी

प ग रि स	–नि स रि ग,–रि रि स स नि़ पं ।	–नि सं रि ग, –स ग रि । ग	प, – नि सं , , , ॥
चे , , ,	लि , , , य , ने , ल , , ,	र , , व , , दे ,	, , , मीर, , ,
रिं, सं नि प	नि सं रिं गं–सं रिंगपं गं रिं सं नि	। रिं रिं सं नि प, –प ।	ग रि स नि प नि स रि ॥
चे , , लु ,	वु , दै , , ना , , , श्री,	व्यं , , कटे ,	, , श , , ,

मुख्तायी स्वरं

ग, रि ग रि स रि,	–निस रि ग रि रि स नि़ । रि,	–नि़ ग रि नि़ स रि ।	प़ नि़ स रि ग, , – प ॥
ग रि स रि,–ग प नि	–रि ग प, –नि़ स रि ग प ।	– प नि़ स़ रि, ग प नि ।	–रि ग प नि सं, , – रिं ॥
रिं सं नि प, – नि गं	रिं सं नि, –प नि सं रिं गं ।	– प, नि स, रिं गं रिं ।	–प नि सं रिं गं रिं– निरि ॥
गं पं गं रिं सं नि –सं	रिं सं नि प ग रि ग प नि ।	– ग रिं , सं नि प–रिं सं ।	, नि प – ग, रि स रि ॥

चरणं

	नि, , , , ,- सं	नि-गं रिं स नि प-प ग रि ।	ग, , ग रि स रि, ।	रि स नि स, रि ग प ॥
	नी , , , ,	स , , , ति , , दो , ,	र , , , , , ,	ने, , गा, न, ,
1.	॥ नि , , प , ,	ग, , रि, , स, नि़ ,	प , , रि , , नि़, ।	स, रि ग प ॥
2.	॥ नि, प ग रि	स रि, -ग रि स नि़ प़,-रि नि ॥	-ग रि नि़ प़ नि़ स ,	-रि ग -नि़ स, रि ग प ॥
3.	॥ निपगरि	नि़ग़रिनि़प़निपसनिरि स ग रि ।	प ग नि प सं नि रिं ।	निं गं रि-निं रि निपग ॥
	॥ प नि सं रिं गं-गप	निसंरि-रिगप निसनिगरिस नि ।	प- रि स नि प ग ।	रि -निछ स,रि गप ॥
4.	॥ सं , , , , ,	निरिसनिपग रि- स रि ग ।	प, , , , , सं नि ॥	प ग रि- स रि ग प नि ॥
	॥ सं रिं,- नि रिं नि प	-ग प रि, -ग प ग रि स ॥	रि नि,- ग रिपगनि ॥	- रि ग प नि सं ॥
	॥ नि प ग प , ,	-रि ग प नि, -ग प नि स रि ।	-प नि सं रिं, गं-निस ।	नि गं रिं रिंनिं,पनि ॥
	॥ गं रिं नि,-सं रिं पं	गं, रिं सं नि -प नि सं रिं ।	सं , ,प, ,-नि प ।	गरिस -नि, स रि ग प ॥

रागं: वसंत

14वें मेल सूर्यकांतं जन्य

आरोहनं- स म ग$_2$ म$_1$ ध$_2$ नि$_2$ सं

अवरोहनं- सं नि$_2$ ध$_2$ म$_1$ ग$_2$ रि$_1$ स

जाति: औडव शाडव

वादी स्वर: मध्यमं

संवादी: निषादं

संचारं

स ग म- ग म- ध नि ध म ग- ग म ग रि स-

नि स म ग म ध, - ध नि सं नि ध म ग म ध नि सं, - नि सं रिं रिं नि ध-

स म ग म ग रि स, - सं नि ध म ग, - ग म ग रि स-

वर्ण पल्लवी

निन्ने कोरियननुर

नेनरंची नन्नेरुकोर

अनुपल्लवी : पन्नग सयनुदौ श्री

पार्थसारथी देव

चरणं : सून सरनी बरी कोर्वलेर

टिप्पणी

रागं : वसंत **रचयिता: तचूर सिंगरचरिलु**

तालं : आदि **17वें मेल सूर्यकांतं जन्य** **आरोहनं- स म ग म ध नि सं**

अवरोहनं- सं नि ध म ग रि स

पल्लवी:- ॥ ग,म,ध,,, सं नि ध नि सं ,,, ध नि सं नि, ध ध नि धधमगम ग रि स ॥

नि, न्ने को , , , , , , , , रि , , , य , , , , , ननु , , , र , , , ,

॥रि स -नि़ध़,नि़स रि स-नि़ स म गम धनि । सं गं रिं सं नि ध स निं । धधमगम ग रि सा॥

ने , ,न , , रं , , ,ची, , , न न्ने , रु, , को , , , , र , , , ,

// ध,, ध म ध नि नि ध धम ग म ग रि स । म ग म स, रि स म । गं म ध नि सं,,,

प , , न्न , , ग , , , , स , , , , य , , नु ,दौ , , , , ,श्री , ,

// सं गं मं गं रिं सं निं सं गं रि स नि । स नि रि स, नि ध म नि ध म ग म ग रि स

पा , , , , ,र्थ -, , , सा, , , , , र, , , ,थी - , , , , , दे - , , , , व, , ,

चौत स्वरं

// रिसनिधनिसमधनिसरिनिसगगमसरिसमगमधमगनिधसनिधमग॥

// मगरिस,धमगरिनिधमगसंनिरिस,निधमनिध,मगधम,गरिस॥

चरणं

सं, , रिं सं नि ध नि ध ध म ग म ग ग रि स,,,, सं नि ध ध म ग म ध ध नि ॥

सू , , न , , स , र , , , नी , , , , , ब , , , , ,री , को र्व ले , , , र

1. स, , नि, ,ध, म, ,ग , , रि , स , , नि , , ध , नि स, ग म ध ध नि ॥
2. स, नि ध म ग ध, म ग रि स, नि ध नि स रि स ग , म ध, म ग नि ध म ध नि ॥
3. ध,,नि ,स ध नि सं ध नि ध म ग म नि ध, , म, ग म ध म ग म ग ग रि स नि ॥
4. ध,,नि, स ध नि स रि स नि स म ग म ध, , म , ग निध म स नि ध म ध ध नि ॥
4. सं, , , , , , नि सं रिं नि, ध म ग , रि स , , , , , गं रिं सं नि ध म ग म ध नि ॥

सं नि, ध म ग, म ध म ,ग रि स, निछ ध नि ,स रि नि , स म ग, म ध , , , ॥

सरिस म ग म ध म ग नि ध म ध ध नि म ग म ध, म ग म ध ध नि नि ध म ग, ॥

मगरिसगमध म ग म ध नि सं गं मं गं रिं सं,नि ध नि ध ध म ग रि स म ध नि ॥

पाठगत प्रश्न

1. सभा गान के लिये प्रयुक्त वर्ण क्या कहलाते हैं?

टिप्पणी

2. वर्ण के कौन से भाग में पल्लवी, अनु पल्लवी और मुखतायी स्वरं होते हैं?

3. राग वसंत कौन से मेल की जन्य राग है?

4. हंसधवनि रागं में वर्ण जलजाक्ष के रचयिता का नाम बताइये।

निर्देशित कार्य कलाप

1. संपूर्ण वर्ण का आकारं में अभ्यास करें।

2. सभा गानों में जायें और भिन्न रागों के वर्ण एकत्र करें।